

नाटो-रूस परषिद वार्ता

प्रलिस के लयः

नाटो, नाटो-रूस परषिद, यूरोपीय संघ (EU), रोड घोषणा ।

डेन्स के लयः

रूस-यूक्रेन संकट, नाटो, नाटो-रूस संबध ।

चरचा में क्योँ?

हाल ही में 'उत्तरी अटलांटिक संघसंगठन' (नाटो) और रूस के मध्य बरुसेल्स में नाटो-रूस परषिद (NRC) में **यूक्रेन की मौजूदा स्थिति** और यूरोप की सुरक्षा हेतु इसके नहलितार्थों पर चरचा की गई ।

- नाटो और रूस के परतनधियों के बीच वार्ता बना कसिी सपष्ट परणाम के संपन्न हुई ।

प्रमुख बडु

■ नाटो-रूस परषिद

- 'नाटो-रूस परषिद' की स्थापना 28 मई 2002 को रोड (रोड घोषणा) में नाटो-रूस शखर सम्मेलन में की गई थी ।
 - इसने स्थायी संयुक्त परषिद (PJC) का स्थान लयि, जो क आपसी संबधों पर वर्ष 1997 के नाटो-रूस स्थापना अधनियम द्वारा परामरश और सहयोग हेतु एक मंच है ।
- 'नाटो-रूस परषिद' परामरश, सर्वसमत-नरिमाण, सहयोग, संयुक्त नरिणय और संयुक्त काररवाई हेतु एक तंत्र है, जसिमें व्यक्तगत नाटो सदस्य राज्ज और रूस समान हति के सुरक्षा मुद्दों के व्यापक स्पेक्ट्रम पर समान भागीदार के रूप में काम करते हैं ।

■ बैठक की मुख्य वशिषताएँ:

- नाटो ने यूरोप में एक नए सुरक्षा समझौते की रूस की मांग को खारजि कर दयि, रूस को यूक्रेन के पास तैनात सैनकों को वापस लेने और खुले संघर्ष के खतरे को कम करने हेतु बातचीत में शामिल होने की चुनौती दी ।
 - अडेरिका और यूरोपीय संघ के लयि यूक्रेन रूस के साथ एक महत्त्वपूर्ण बफर के रूप में कार्य करता है । यूक्रेन ओचाकवि में और दूसरा बरदयिासक में एक नौसैनिक अडडा भी बना रहा है, जसिसे रूस खुश नहीं है ।
- रूस ने नाटो में और सदस्यों को शामिल करने तथा अपने पूर्वी सहयोगियों से पश्चिमी ताकतों को वापस लेने की मांग की । इसने यह भी चेतावनी दी क इससे "यूरोपीय सुरक्षा के लयि सबसे अपरत्याशति और सबसे भयानक परणाम" हो सकते हैं ।
 - नाटो सहयोगियों और रूस के मध्य अत्यधिक मतभेद हैं जनिहें पाटना आसान नहीं होगा ।

■ रूस-यूक्रेन संकट पर भारत का रुखः

- भारत पश्चिमी शक्तियों द्वारा क्रीमिया में रूस के हस्तक्षेप की नदिा में शामिल नहीं है तथा इस मुद्दे पर उसने अपना एक तटस्थ रुख रखा ।
- नवंबर 2020 में भारत ने **संयुक्त राष्ट्र (UN)** में यूक्रेन द्वारा प्रायोजति एक प्रस्ताव के खलिाफ मतदान कयि, जसिमें क्रीमिया में कथति मानवाधिकार उल्लंघन की नदिा की गई थी तथा रूस द्वारा इसका समर्थन कयिा गया था ।

उत्तर अटलांटिक संघसंगठन (नाटो):

- नाटो की स्थापना 4 अपरैल, 1949 की उत्तरी अटलांटिक संघि (जसिे वाशगिटन संघि भी कहा जाता है) द्वारा संयुक्त राज्ज अडेरिका, कनाडा और कई पश्चिमी यूरोपीय देशों द्वारा सोवयित संघ के खलिाफ सामूहिक सुरक्षा प्रदान करने के लयि की गई थी ।
- नाटो सामूहिक रक्षा के सदिधांत पर काम करता है, जसिका तात्पर्य 'एक या अधिक सदस्यों पर आक्रमण सभी सदस्य देशों पर आक्रमण माना जाता है । ज्ञातव्य है क यह नाटो के अनुच्छेद 5 में नहलित है ।
- वर्ष 2019 तक इसके सदस्य देशों की संख्या 30 थी । वर्ष 2017 में मोंटेनेग्रो इस गठबंधन में शामिल होने वाला नवीनतम सदस्य देश बन गया है ।



NATO MEMBER COUNTRIES

आगे की राह

- स्थिति का एक व्यावहारिक समाधान मनिस्क शांति प्रक्रिया को पुनर्जीवित करना है। इसलिये पश्चिमि (अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों) को दोनों पक्षों के बीच बातचीत फरि से शुरू करने तथा सीमा पर शांतिबिहाल करने हेतु मनिस्क समझौते के अनुसार अपनी प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिये प्रेरित करना चाहिये।
- यूरोपीय सुरक्षा को हो रहे नुकसान, मानवीय और आर्थिक लागतों को मजबूत करने तथा यूक्रेन की संप्रभुता के लिये खतरे को रोकने हेतु अमेरिका को सभी पक्षों के साथ एक ओएससीई-मध्यस्थता प्रक्रिया में सीधे शामिल होने के लिये समझौता कीकरना चाहिये

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस